हृद्रोग

निरूक्तिः- **हृद्रोगमिति 'वा शोकष्यञ्रोगेषु' इति रोगे परे हृदयस्य हृद्भावः, अथवा हृदो रोगो हृद्रोगः॥२॥**

(मा.नि.29/2 पर मधुकोष)

हृद्रोगमिति वाच्ये यद्बाधाग्रहणं, तद्दोषभेदेन बाधावैचित्र्यज्ञापनार्थं, बाधाशब्देन चात्र नानाविधा पीडेति जेज्जटः

हृदय में होने वाल विकार हृदय रोग कहलाता हैं।

हृद्रोगनिदानम् |

अत्युष्णगुर्वन्नकषायतिक्तश्रमाभिघाताध्यशनप्रसङ्गैः |`

सञ्चिन्तनैर्वेगविधारणैश्च हृदामयः पञ्चविधः प्रदिष्टः ||१|| (मा.नि 29/1)

निरन्तर अत्यधिक गरम व अधिकगुरू भोजन करने से, कषाय तथा कड़वे पदार्था के सेवन से, श्रम चोट, अध्यशन, अधिक चिन्तन तथा अधारणीय वेगों के धारण करने से पाँच प्रकार का हृदरोग उत्पन्न होता हैं।

व्यायामतीक्ष्णातिविरेकबस्ति चिन्ताभयत्रासगदातिचाराः।

छर्द्यामसंधारणकर्षनानि हृद्रोगकर्तृणि तथाऽभिघातः।। (च.चि. 26/77)

व्यायाम, तीक्ष्ण आहार, विरेचन और बस्ति का अतिमात्र सेवन, चिन्ता, भय, त्रास और अन्य किसी भी रोग की चिकित्सा समुचित न होना, अधिक वमन, आमदोष, वेगों को रोकना, शरीर कृश करने वाले आहार-विहार का सेवन, हृदय या शरीर पर चोट का लगना; हृदयरोग का कारण होता हैं।

सम्प्राप्तिः-

त्रिदोषजे तु हृद्रोगे यो दुरात्मा निषेवते ।

तिलक्षीरगुडादीनि ग्रन्थिस्तस्योपजायते । मर्मैकदेशेसंक्लेदं रसश्चास्योपगच्छति ।।

संक्लेदात क्रिमश्चास्य भवन्त्युपहतात्मनः। मर्मैकदेशे संजाताः सर्पन्तो भक्षयन्ति च ।।

च.सू.17/36-38)

त्रिदोष के कोप से होने वाले हृदयरोग में जो दुरात्मा (अजितेन्द्रिय) पुरूष तिल, दूध और गुड आदि पदार्थो को अधिक रूप में सेवन करता हैं। उसके मर्म स्वरूप हृदय के एक प्रदेश मे ग्रन्थि बन जाती है, उस ग्रन्थि में रस धातु आकर क्लेद उत्पन्न कर देता हैं।तब उस उपहतात्मा मनुष्य के हृदय में क्लेद से क्रिमियां उत्पन्न हो जाती है। प्रथम तो वे क्रिमियां मर्मस्वरूप हृदय के एक प्रदेश में उत्पन्न होती है पर वहाँ से हृदय के सभी प्रदेश में चलती हुई शनैः शनैः सम्पूर्ण हृदय का भक्षण कर जाती है।

दूषयित्वा रसं दोषा विगुणा हृदयं गताः।

कुर्वन्ति हृदये बाधां तं हृद्रोगं तं प्रचक्षते।। (सु.उ. 43/4)

स्वनिदानों से प्रकुपित हुये, वातादि दोष हृदय में स्थित होकर रस धातु को दूषित कर हृदय के कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हैं एवं हृद्रोग को उत्पन्न करते हैं।

भेदः-

1. वात्तिक हृद्रोग 2.पैत्तिक हृद्रोग 3.कफज हृद्रोग 4.सन्निपात्तिक हृद्रोग 5.कृमिज हृद्रोग

सुश्रुत के अनुसार भेद:

चतुर्विधः सं दोषैः स्यात् क्रिमिभिश्च पृथक्-पृथक्।

लक्षणं तस्य वक्ष्यामि चिकित्सितमनन्तरम्।। (सु.उ.43/5)

1. वात्तिक हृद्रोग 2. पैत्तिकहृद्रोग
3. कफज हृद्रोग 4. कृमिजन्य सन्निपात्तिक हृद्रोग

हृद्रोगो के विशष्ट लक्षणः-

1. वात्तिक हृद्रोग के लक्षण:

आयम्यते मारूतजे हृद्रोगं तुद्यते तथा ।

निर्मथ्यते दीर्यते च स्फोटयते पाटयतेऽपि च ।। (सु.उ.43/6)

वात्तिकहृद्रोग में हृदय में खिंचावट तथा सूतिकावेधनवत् पीडा होती हैं। रोगी को कभी-कभी प्रतीत होता है कि उसके हृदय को कोई डण्डे से मथ रहा है। दो टुकडे कर रहा है अथवा आरे या कुल्हाडी से चीर रहा है।

वेपथुर्वेष्टनं स्तम्भः प्रमोहः शून्यता दरः।

हृदि वातातुरे रूपं जीर्णे चात्यर्थवेदना।। (च.सू. 17/31)

हृदय जब कुपित वायु से पीडित होता है तो उसमें वेपथु(धड़कन), वेष्टन(ऐंठन), स्तम्भ (हृदय की गति मे रूकावट होना), प्रमोह(मूच्र्छा), शून्यता, दर (हृदयमें दरदर या मरमर ध्वनि की प्रतीति होना) ये लक्षण वातजन्य हृदय रोग में होते है और विषेष रूप लक्षण भोजन के पच जाने पर अधिक रूप में बढ़ जाते है।

2. पैत्तिक हृद्रोग के लक्षण:

तृष्णोष्मादाहचोषाःस्युःपैत्तिके हृदयक्लमः।

धूमायनंच मूर्च्छा च स्वेदःषोषो मुखस्य च।। (सु.उ.त.43/7)

पित्तजन्य हृद्रोग में प्यास, गर्मी, दाह, चोष, हृदय की व्याकुलता, धूम निकलने की सी प्रतीति मूर्च्छा पसीने का आना तथा मुख का सूखना ये लक्षण होते है।

पित्तात्तमोदूयनदाहमोहाःसंत्रासतापज्वरपीतभावाः ।।(च.चि.26/79)

पित्तजन्य हृदयरोग मे ऑख के सामने अन्धकार का प्रतीत होना शरीर में दाह विषेषकर हृदय प्रदेश में, और मोह, त्रास, ताप की वृद्धि, ज्वर, और शरीर पीले वर्ण का हो जाना ये सब होते है।

3. कफज हृद्रोग के लक्षण:

गौरव कफसंस्त्रावोऽरूचिः स्तम्भोऽग्निमार्दवम्।

माधुर्य्यमपि चास्यस्य बलासावतते हृदि।। (सु.उ.त. 43/8)

हृदय के कफ द्वारा आवृत (आक्रान्त) होने पर शरीर में भारीपन कफ या लाला का स्त्राव भोजन में अरूचि, हृदयादिक में स्तम्भन अग्नि की मन्दता तथा मुख की मधुरता ये लक्षण होते है।

स्तब्धं गुरूस्यात् स्तिमितं च मर्म कफात् प्रसेकज्वरकासतन्द्राः।

विद्यात्त्रिदोषं त्वपि सर्वलिङ्गं तीव्रार्तितोदं कृमिजं सकण्डूम्।। (च.चि.26/80)

कफ से उत्पन्न होने वाले हृदय रोग में हृदय जकडा़ हुआ, भारी और स्तिमित प्रतीत होता है तथा मुख से कफ का प्रसेक, ज्वर, कास और तन्द्रा होती है।

4. सन्निपात्तिक हृद्रोग के लक्षण: आचार्य चरक एवं सुश्रुत ने सन्निपात्तिक हृद्रोग में तीनों के मिश्रित लक्षण बताये है।

5.कृमिज हृद्रोग के लक्षण:

उत्क्लेषः ष्ठीवनं तोदः षूला हृल्लासकस्तमः।

अरूचिः ष्यावनेत्रत्वं षोषश्च कृमिजे भवेत्।। (सु.उ.43/9)

त्रिदोष प्रकोपणयुक्त कृमिजन्य हृद्रोग में जी मिचलाना, बार-बार थूँकना, हृदय में सूई चुभोने की सी पीडा़, शूल,लालास्त्राव, आँख के सामने अन्धकार का छा जाना,अरूचि, नेत्रों के चारों और तथा नीचे ष्यावता और शरीर का सूखना ये लक्षण उत्पन्न होते हैं।

आचार्य चरक ने कृमिज हृदयरोग के निम्न लक्षण वर्णित किए हैं।

1. तीव्र वेदना 2. तोद 3. कण्डू

साध्यासाध्यता:-

साध्य- वात्तिक, पैत्तिक एवं कफज हृद्रोग साध्य होते है।

याप्य- सन्निपातज एवं कृमिज हृद्रोग नवीन होने पर याप्य है।

असाध्य- दुर्बल रोगी में उपद्रव युक्त हृद्रोग असाध्य होते है।

अरिष्ट लक्षण जैसे स्तैमित्य, आयताक्ष एवं तीव्र उरोग्रह होने पर हृद्रोग असाध्य होता हैं।

उपद्रव: **क्लमःसादो भ्रमः** शो**षो ज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः।**

क्रिमिजे क्रिमिजातीनां ष्लैष्मिकाणां च ये मताः ।।(मा.नि.29/7)

हृद्रोग में क्लम(शरीर मे बिना परिश्रम के थकावट की प्रतीति), अवसाद, **भ्रम** तथा शो**ष** ये उपद्रव होते हैं। ष्लैष्मिक क्रिमियों के उपद्रव ही क्रिमिज हृद्रोग में भी होते हैं।

चिकित्सा सिद्धान्त:

वात्तिक हृद्रोग का चिकित्सा सिद्धान्त:

वातोपसृष्टे हृदये वामयेत् स्निग्धमातुरम्।

द्विपंचमूलीक्वाथेन सस्नेहलवणेन च ।। (च. द. 21/1)

स्नेहन: हरीतक्यादि घृत व पुनर्नवादि तैल से स्नेहन करायें ।

वमन: घृत, सैधव व दशमूल क्वाथ से वमन करायें।

वाताधिक्य होने पर पुष्करमूल,बिजौरा नीबू,षुष्ठी,कर्पूर, हरीतकी एवं वच का कषाय पान करायें।

www.pinkcityayurveda.com

तैलं ससौवीरकमस्तुतक्रं वाते प्रपेयं लवणं सुखोष्णम्।

मूत्राम्बुसिद्धं लवणैश्च तैलमानाहगुल्मर्तिहृदामयघ्नम्।। (च.चि. 26 /81)

वातज हृदय रोग में सोवीर, दही का पानी, मट्ठा सेंधानमक को कुछ गर्म तैल मे मिलाकर पीना चाहिये। अथवा गोमूत्र और कांजी एवं नमक के साथ गरम-गरम तिल का तैल पीना चाहिए या गोमूत्र कांजी और पाँचो नमक के साथ तिल का तैल पकाकर पीना चाहिये। ये दोनो योग आनाह गुल्म की व्यथा और हृदय रोग को दूर करते हैं।

पैत्तिक हृद्रोग का चिकित्सा सिद्धान्त:

शीताः प्रदेहाः परिषेचनानि तथा विरेको हृदि पित्तदुष्टे|

द्राक्षासिताक्षौद्रपरूषकैः स्याच्छुद्धे तु पित्तापहमन्नपानम्||९०|| (च.चि.26/90/च.द.31/ 6-7)

पित्त से दूषित हृद्रोग में षीतल द्रव्यो का लेप तथा परिषेचन करायें । मृदु विरेचन करायें ।

मुलेठी तथा कुटकी को मिश्री जल के साथ पीसकर पान करायें।

कफज हृद्रोग का चिकित्सा सिद्धान्त

स्विन्नस्यवान्तस्यविलङ्घितस्यक्रियाकफघ्नीकफमर्मरोगेद्य

कौलत्थधान्यैश्चरसैर्ववान्नंपानानितीक्ष्णानिचशङ्कराणिद्यद्य९६ (च.चि.)

वचानिम्बकषायाभ्यां वान्तं हृदि कफोत्थिते ।

वातहृद्रोग हृच्चूर्ण पिप्पल्यादि च योजयेत्।। (च.द 31/10)

वच एवं नीम के कषाय से वमन कराये शिलाजतु रसायन का कल्प विधि से सेवन करायें ।

त्रिदोषज हृद्रोग का चिकित्सा सिद्धान्तः-

त्रिदोषजे लंघनमादितः स्यादन्न्ाांच सर्वेषु हितं विधेयम्।

हीनाधिमध्यत्वमवेक्ष्य चैव कार्य्य त्रयाणामपि कर्मषस्तम्।। (च.द. 26/11)

सर्वप्रथम लंघन करायें ।त्रिदोष षामक आहार-विहार का सेवन करायें ।विरेचन भी कराया जा सकता हैं।त्रिदोषज हृद्रोगो में दोषों के हीन मध्याधिकत्व को देखकर चिकित्सा करनी चाहिए।

कृमिज हृद्रोग का चिकित्सा सिद्धान्त:

क्रिमिहृद्रोगिणं स्निग्धं भोजयेत पिषितौदनम् ।

दध्ना च पललोपेत् त्र्यहं पश्चाद्विरेचयत् ।। (च.द. 31/23)

कृमिज हृद्ररोग मे रोगी को स्नहे मिश्रित मांस, भात तथा दही के साथ तिल चूर्ण का तीन दिन सेवन करायें। पर्याप्त स्नेहन हो जाने के बाद विरेचन करायें।

कार्य तथा लंघनपाचनं सर्व कृमिहृद्गदे च ।। (च.चि 26/103)

लंघन एवं पाचन तथा कृमिघ्न औषधियों का प्रयोग कृमिज रोग में हितकर हैं ।

पथ्य एवं अपथ्य

पथ्य:

स्वेदो विरेको वमनं च लघंन, बस्तिर्विलेपोचिररक्तषालयः।

मृगद्विजा जांगलसंज्ञायऽन्विता यूषा रसा मुदकुलत्थसंभव।।

रागाः खडाः काम्बलिकाश्च षाडवा भयं पटोलं कदलीफलान्यपि।

.....हृद्रोगनिपीडितस्य।। (भै.र. 33/78-81)

स्वेदनकर्म, विरेचन, वमन, लंघन, बस्तिकर्म, विलेपी, पुराने लाल चावल, जांग़लदेष के पषुपक्षियों का मांसरस, मूंग और कुलथी का यूष, राग, खंडयूष, काम्बलिक, यूष, षाडव, लिसोडे का फल, परवल, केले का फल, पुराना पेठा, आम का मीठा फल, अनार, अमलतास का साग, नई मूली, एरण्ड तैल आकाष का जल, सैंधव नमक, दाख, मठा, पुरानागुड़, अजवाइन, लहसुन, हरड़, कूठ, धनिया, पीपर, अदरख, सौवीर(कांजी), षुक्ल(सिरका) षहद, मदिरा, कस्तूरी, सफेद चन्दन, इमली आदि का पान और ताम्बूल ये सब हृद्रोग के पथ्य है।

अपथ्यः-

तृट्छर्दिमूत्रानिलषुक्रकासोद्गारश्रमश्वासविडश्रुवेगान्।

सहमाद्रिविन्ध्याद्रिनदीजलानि मेषीपयो दुष्टकल कषायम्।।

विरूद्धमुष्णं गुरू तिक्तमम्लंपत्रोत्थषाकानि चिरन्तनानि।

क्षारं मधूकानि च दन्तकाष्ठंरक्तस्त्रुति हृद्रदवान् परित्यजेत्।। (भै.र.33/82-83)

तृषा, वमन,मूत्र, अधोवायु,वीर्य,खांसी,डकार, श्रम से उत्पन्न ष्वास, विष्ठा और आंसू इन सभी के उपस्थित वेगों को रोकना, सहमाद्रि तथा विन्धयाद्रि से निकली हुई नदियों का जल भेड का दूध, दूषितफल, कषायरस,विरूद्ध अन्न, उष्ण, गुरूपाकी, तिक्त, अम्ल पदार्थाे का भोजन, पत्तो का पुराना षाक, क्षारपदार्थ , महुआ ये सब हृद्रोग मे अपथ्य कारक है।

हृद्रोगो की दोषानुसार चिकित्सा

i.वात्तिक हृद्रोग :–

1. **संशोधन चिकित्सा :–**i. स्नेहन एवं मृदुस्वेदन
   ii. वमन (मृदु)
   iii शिरोधारा
2. **संशमन चिकित्सा :–** वात्तिक हृद्ररोग की चिकित्सा में प्रयुक्त विभिन्न संशमन योगों का वर्णन निम्न अनुसार है।

1. रस/भस्म पिष्टी

मात्रा :– 125–250 मि.ग्रा. **अनुपान :–उष्णजल**

नागार्जुनाभ्ररसः	अर्जुन एवं अभ्रक (र.र.स.)
हृद्यार्णव रसः	पारद गंधक,ताम्र भस्म (भै.र)
त्रिनेत्र रसः	पारद् गंधक, अभ्रक।(र.र.स.)
मुक्तापिष्टीः	मुक्ता (भैषज्यरत्नावली)

2. वटी

मात्रा :– 250– 500 mg अनुपानः जल

i- प्रभाकरवटी :स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौहभस्म, अभ्रक भस्म एवं शिलाजतु (भै.र 33/42–43)

ii- शंकरवटीः पारद,गंधक,लौह,भस्म,नागभस्म (भै.33/44–51)

हृद्रोगवटीः पारद,गंधक,वत्सनाभ,रजत भस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म (भैषज्यरत्नावली)

3. चूर्ण

मात्रा – 3–6 Gm अनुपान – जल/शहद

i- पिप्पली चूर्णः पिप्पली, वच व हींग, अजमोद,यवक्षार सैधव लवण। (भै.र.)

ii- पुष्पकरमूल चूर्णः पुष्पकरमूल (भै.र.)

iii- हरीतक्यादि चूर्णः हरड़, वचा,रास्ना, पिप्पली, सोठ, कपूर, पुष्करमूल। (भै. र. 33)

4. क्वाथ /आसव/ अरिष्ट

मात्रा : 20–30 मि.ली अनुपानः जल

i- शुण्ठीक्वाथः सौंठ

ii- पथ्यादिकल्कः हरड़, कचूर,पुष्करमूल,पचंकोल। (भैषज्यरत्नावली)

iii- पार्थाद्यरिष्टः अर्जुन, मुनक्का,महुआ। (भैषज्यरत्नावली 33/75–77)

5. घृत

मात्राः 20–30 मिली. अनुपानः उष्ण जल

i- अर्जुन घृतः अर्जुन छाल,घृत (भैषज्यरत्नावली 33/74)

6. पाक/ अवलेह

मात्रा : 20 ग्राम अनुपानः दुग्ध

i- च्यवनप्राशः

ii- वासावलेह (च.चि.26/100)

ii.पैत्तिक हृद्रोग की चिकित्सा

i.संशोधन चिकित्सा 1. मृदु विरेचन

ii. संशमन चिकित्सा

i रस/भस्म / पिष्टी/वटी

वात्तिक हृद्रोग की रस /भस्म/पिष्टी का प्रयोग पैत्तिक हृद्रोग में भी प्रशस्त हैं।

ii.**चूर्ण**

मात्रा : 3–6 ग्राम अनुपान– जल/शहद

i- अर्जुनचूर्ण

ii- मधुयष्ठी चूर्ण

iii. क्वाथ / आसव / अरिष्ट

मात्रा : 20–30 मिली अनुपान : जल

i- पार्थाद्यरिष्ट(भै. र.)

iv. घृत

मात्रा – 10–30 मि.ली. अनुपान – उष्ण जल

i- द्राक्षाद्य घृत

v क्षीरपाक

मात्रा – 50 मिली

i- अर्जुनक्षीरपाक (भै.र.)

iii कफज हृद्रोग की चिकित्सा

i- **संशोधन चिकित्सा :–**

i- स्नेहन–स्वेदन

ii- मृदु– वमन

iii- शिरोधारा

ii- **संशमन चिकित्सा** :–

i- रस/भस्म/वटी/पिष्टी– वातिकहृद्रोग के समान

ii- चूर्ण मात्रा 3–6 ग्राम अनुपान जल/ शहद

i- पाठादि चूर्ण

ii- पुष्करमूल चूर्ण

iii- पिप्पल्यादि चूर्ण

iii- क्वाथ/आसव –अरिष्ट

i- कटफलादि क्वाथ (र.र स.)

ii- दशमूल क्वाथ (र.र स.)

iv **अवलेह :–**

मात्रा :– 20 ग्राम अनुपान :– दुग्ध/गरम जल

i उदुम्बरादिलेह

V. रसायन :– शिलाजीत रसायन 2तोला(20 gm)

iv त्रिदोषज हृद्रोग की चिकित्सा

i संशोधन चिकित्सा 1. लंघन 2. विरेचन

ii संशमन चिकित्सा

भस्म :– मात्रा 250 – 500 ग्राम अनुपान – घृत

मृंगश्रृंग भस्म :– मृंग श्रृंग

चूर्ण मात्रा 3–6 ग्राम अनुपान – जल/घृत/ शहद

पुष्कर मूल चूर्ण :– पुष्करमूल

पाठादि चूर्णः पाठा, वच,यवक्षार, हरड़,चित्रक, त्रिकटु

अवलेह :– मात्रा 15– 20 ग्राम अनुपान :– दुग्ध

v.कृमिज हृद्रोग की चिकित्सा

i- **संशोधन चिकित्सा**–स्नेहन,स्वेदन, विरेचन, पाचन, लंघन

ii- संशमन चिकित्सा

i- चूर्ण

मात्रा – 3–6 ग्राम अनुपान – कोष्ण जल / गोमूत्र

i- बिडंगादि चूर्ण : बिडंग कूठ

ii- पुष्करादि चूर्ण : पुष्करमूल, कचूर सौंठ

iii- पिप्पल्यादि चूर्णः

iv- पलाश बीज चूर्ण

2 **क्वाथ/आसव/अरिष्ट**

मात्रा – 10–20 मिली अनुपान– जल

i बिडंगारिष्ट : बिंडग, मुस्तक, चित्रक, धातकी, हरीतकी

3 **घृत :–**

मात्रा – 10–30 ML अनुपान – उष्ण जल, दुग्ध

i- बलाद्य घृत– बला,नामबला, अर्जुन भै र

ii- अर्जुनघृत –अर्जुन घृत

4 **लौहः–** मात्रा 500 mg– 1gm

नवायस लौह ,त्रिफला,त्रिमद,लौह,त्रिकटु